हंसराज भारती की चार कविताएं

अभी भी

घुप्प अंधेरे में कहीं
इक दीया जला
वीराने में एक गुलाब खिला
लम्बे, सुनसान रास्ते में
यूं ही कोई हमसफ़र मिला
लगा ज़िन्दगी अभी भी
कितनी खूबसूरत है

उदास मौसम में
एक बच्चा खुलकर हंसा
एकान्त सूनी घाटी में
प्यार का एक गीत गूंजा
दूर एक सूने आंचल को
ज़िन्दगी की सौगात मिली
फिर से जीने की ललक छाई है

दूर मोर्चे से सुख-शांति
की चिट्ठी है आई
सूखे उपेक्षित पौधों पर
नयी कोपलें हैं निकली
कुहरे छंटे हैं
धूप चमकी है
मौसम निखरा है
चल पड़ा है फिर से
रुका हुआ सिलसिला

सच

कूल्ह पक्की और मजबूत
होने पर भी
पानी हर बार वहीं से रिसता है
जहां से उम्मीद नहीं होती
धुर वही टूटती है
जो नयी और सख्त होती है
पर यह बात
सोलह आने सच है कि
कूल्ह चाहे कच्ची हो
या पक्की
चक्की इनकी हो या उनकी
आटा हमेशा गरीब का ही
मोटा पीसा जाता है।

पेड़

यदि मैं पेड़ होता
तो ज़िन्दगी के मरुस्थल
में हरा-ही हरा बोता
हरियाली बांटता
छाया फैलाता
पर कभी कुछ न कहता।

चांद सिर्फ उनका है

चांद सिर्फ उनका है चंचलो
जिनके यहां सदा के बबरु
पकते हैं
जिनकी कूल्हें सदा
पानी से भरी रहती हैं
जो जानते हैं
स्वर्ग को जाने वाले
सारे रास्ते
जिनके पांव के नीचे होते हैं
तुम्हारे हाथ
उनके असर की धूप
हर सभा, हर दफ्तर और
हर कानून पर चमकती है
चित हो या पट
उनकी पांचों सदा घी में ही होती हैं
अपनी तो अड़िए
यही शुष्क, बंजर धारें
सूखी, पथरीली खड्डें
खाली कूल्हें, खड़ी कुआलियां
पानी को तरसती फसलें
मोर्चों से सुन्दर युवा
बेटों की मौत की खबरें हैं
दम तोड़ते सपने
खण्डहर होती उम्मीदें
लहूलूहान मौसम
मेहनत, ईमानदारी और नैतिकता
की कड़वी घुट्टियां हैं
फिर चांद हमारा कैसे
हो सकता है।

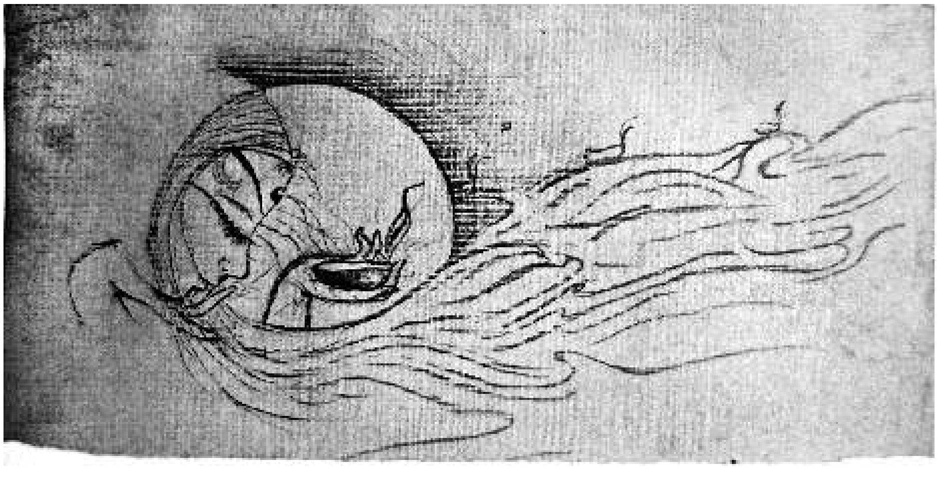

32/1 गांव-पोस्ट, बसंतपुर तह.सरकाघाट, मण्डी 175042 - हि.प्र.